PRATHAM BOOKS
A Book in Every Child's Hand

पठन स्तर ३

कोट्टवी राजा और उनींदा देश

Author: Yasaswini Sampathkumar

Illustrator: Henu

Translator: Swagata Sen Pillai

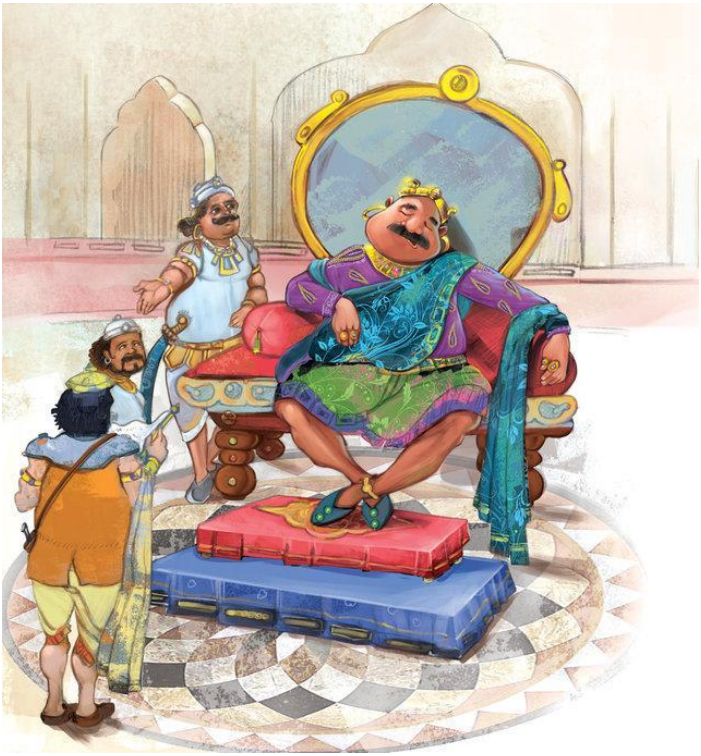

हा.....आआआउउउउममम!

कोट्टवी राजा को नींद आ रही थी। उनका मंत्रीमंडल कसी जटलि समस्या पर चर्चा कर रहा था और राजा ऊब गए थे।

कल रात उन्हें नींद नहीं आई थी और न उसकी पछिली रात। न ही उससे पहले कुछ तीस रात। उन्होंने ध्यान लगाने की कोशशि की। मगर वाक्य अस्पष्ट हो रहे थे!

“जहाँ तक पट्टेदार की बात है, ज़मीन जोतने का अधिकार र र र र... और उसका कर तो उसको ओ ओ ओ... उउउउउउ अम्म्मम्म्म्म्म ”

उनका सर फिर छाती पर आ लटका।

राजा नल्लन अच्छे राजा थे। मगर हाल में, दिन के समय जागे रहना उनके लिए बड़ा मुश्किल हो रहा था। दिन भर राजदरबार में जम्हाईयाँ लेते रहते थे। इसीलिए लोगों ने उन्हें कोट्टवी राजा बुलाना शुरू किया, क्योंकि तमिल भाषा में जम्हाई को कोट्टवी कहते हैं।

“सुजाता,” एक रात अपनी रानी को धीरे से जगाते हुए उन्होंने पूछा, “तुम दिन भर इतनी फुर्तीली और चौकन्ना कैसे रहती हो?”

“क्योंकि मैं रात को सोती हूँ,” उन्होंने झुंझलाकर बोला, “और आप को भी वही करना चाहिए।”

“हाँ, रात को सोना चाहिए, सही बात।” मगर कैसे? दिन भर उन्हें नींद आती रहती थी, शाम को सबसे ज़्यादा। मगर रात तक, वो एकदम चुस्त हो जाते थे, कोई सुस्ती नहीं!

अगले दिन सभा में, कोट्टवी राजा ने पूछा, “मुख्य मंत्रीजी, आप क्या करते हैं जब आपको रात में नींद नहीं आती?”

“मैं नींद की देवी, निद्रा माँ से प्रार्थना करता हूँ कि मुझ पर कृपा दृष्टि रखें।”

“वो कैसे?”

“मेरी माँ कहा करती थीं देवी भरे पेट को इंकार नहीं कर सकती। सो मैं अपने रसोइए से कहता हूँ कि मुझे शानदार भोजन बनाकर दे, गरम, मीठे पकवानों से भरा। बस, खाने के दो मिनिट के अंदर, मैं पूरी नींद में होता हूँ।”

राजा की नज़र मुख्य मंत्रीजी की तोंद पर पड़ी। उन्हें पूरा यकीन आ गया।

वित्त मंत्रीजी भी पीछे नहीं रहना चाहते थे। सो उन्होंने कहा, “मैं हर रात शहद मिलाकर गरम दूध पीता हूँ। बिलकुल सहज, कोई तामझाम नहीं। रसोइए को परेशान करने की भी ज़रुरत नहीं। और मैं हमेशा पूरे नौ घंटे सोता हूँ।”

राज संगीतकार को यह खाने की कहानियाँ बिलकुल नहीं भा रही थीं। भरा पेट हो, तो वो गा ही नहीं सकते! मगर वो भी कुछ मदद करना चाहते थे। सो उन्होंने कहा, “हमारे वंश में, महाराज, हम निद्रा देवी का स्वागत हमेशा संगीत से ही करते हैं। नीलाम्बरी राग में गाई हुई कोई सुन्दर रचना, वीणा की संगत में... आ हा, परमानन्द!”

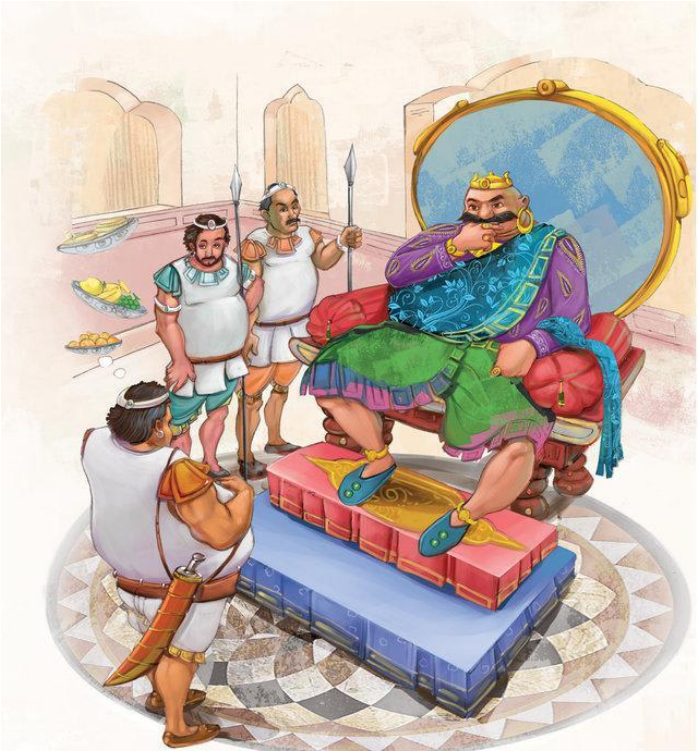

राजकवि ने कहा, “महल के बगीचे में एक हल्की सी सैर, मंद मंद हवा के बीच, पारजात पर चांदनी बखिरती हुई.... आह! उस क्षण की मधुरता और सुंदरता आपकी सारी थकान को मटिा देगी महाराज। नदि्रा देवी को शांत मन से बड़ा लगाव है।”

राज वदिूषक ने और जोड़ा, “अगर और कसिी से काम न बने महाराज, तो एक अच्छी कहानी तो नश्चिति रूप से आपको सुला देगी।”

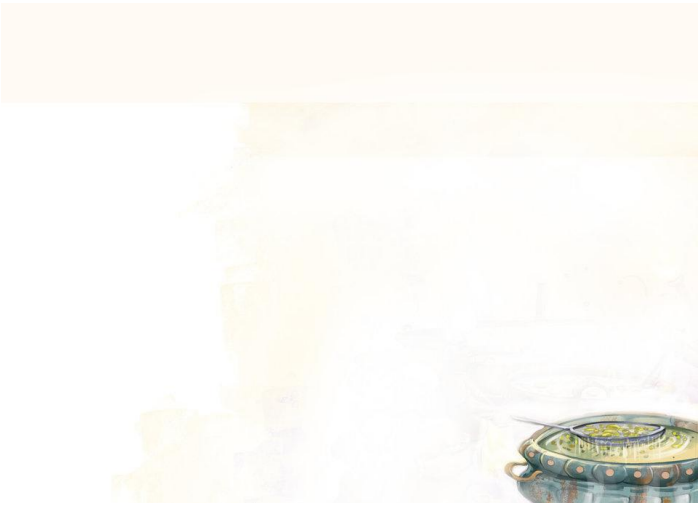

कोट्टवी राजा ने सोचा, इतनी सारी चीज़ें हैं करके देखने को।
इनमें से कोई तो कारगर होगी ही।

उस रात को, राजरसोइए से कहा गया
वशिैष भोज तैयार करने को।

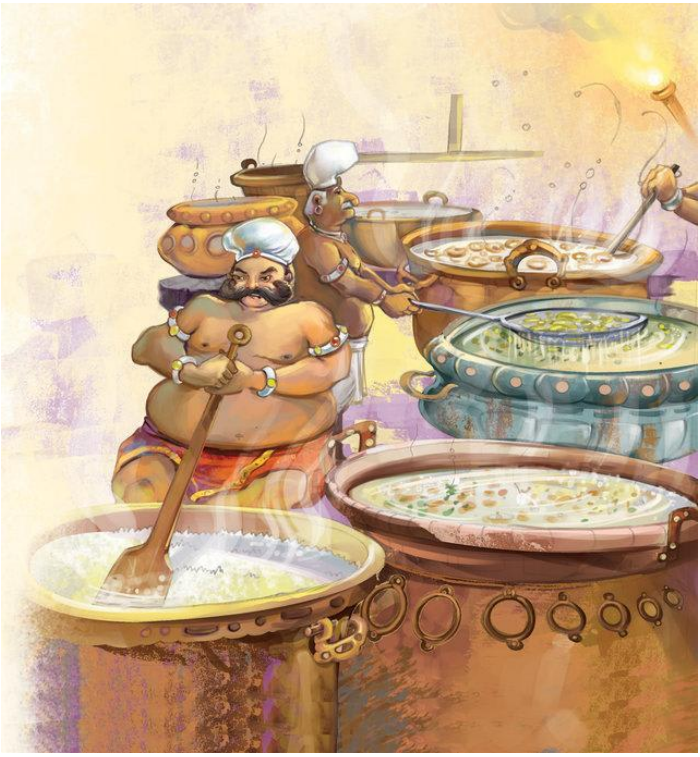

घी के साथ गरम चावल,
गरमा गरम साम्बर, तले हुए आलू, जमीकंद और खसखस की खीर। और इस सब को ढंग से पचाने के लिए, ठंडी छाछ। इस आशा में कि वो रात को अच्छी नींद सो पाएंगे, राजा ने हर चीज़ को दो - दो बार खाया।

जब तक उन्होंने खाना ख़त्म किया, ग्यारह बजने वाले थे। मगर, पुरानी आदतों को तोड़ना आसान नहीं होता - उन्हें अब भी नींद नहीं आ रही थी।

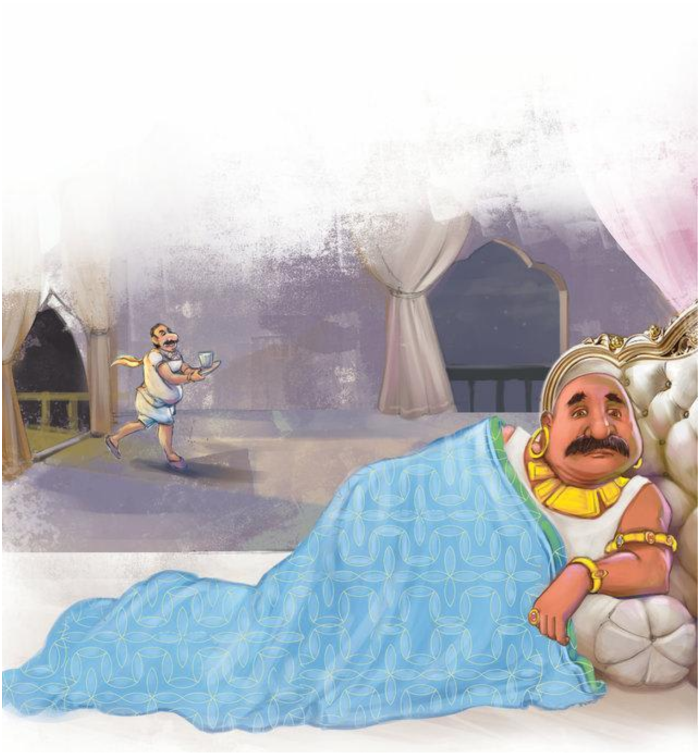

बिस्तर पर करवट बदलते बदलते वो परेशान हो गए और मुख्य मंत्री पर उन्हें बड़ा ही गुस्सा आया। निद्रा देवी अब भी लापता थीं! उन्हें लगा, शायद उन्होंने भरपेट न खाया हो।

“रसोइया!” उन्होंने चिल्ला कर बुलाया।

आधा सोया हुआ रसोइया जल्दी से तैयार होकर राजा के पास दौड़ा।

“फटाफट मुझे एक गलिास गरम दूध में शहद मलिकर लाके दो!
जल्दी करो!”

कोट्टवी राजा ने एक ही सांस में उसे पी लिया। ओह! पेट कितना भर गया! उठना नामुमकिन, हिलना नामुमकिन और लेट कर सो जाना तो बिलकुल ही नामुमकिन।

“शायद संगीत सुन लूँ तो नींद आ जाए,” उन्होंने सोचा।

राज संगीतकारों को बुलावा भेजा गया। वो भागे भागे आए, पगड़ियाँ टेढ़ी-मेढ़ी बंधी हुईं, जल्दी में पहनी हुई धोतियाँ खुली-बंधी सी। रात आधी गुज़र चुकी थी।

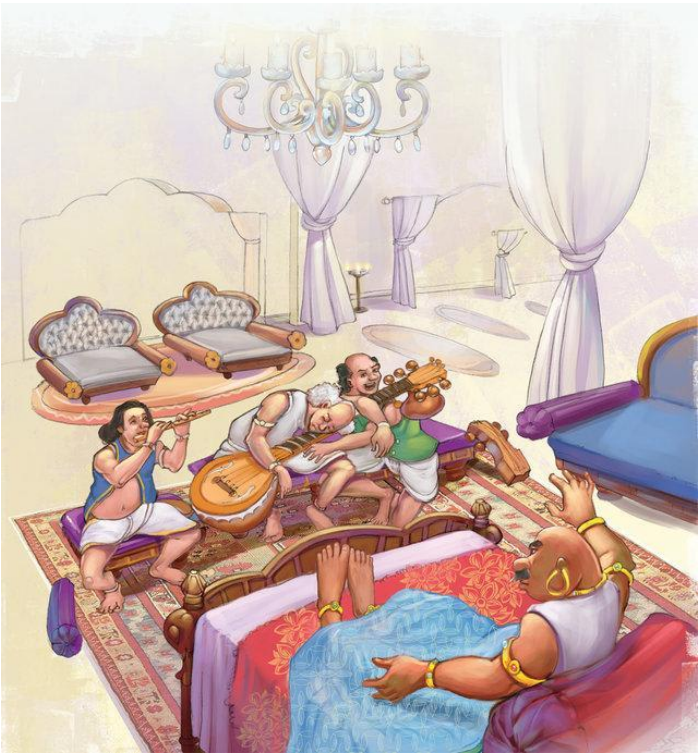

“हमारे लिए नीलाम्बरी बजाई जाए!” हुकम दिया राजा ने।

रात की शान्ति में उस मधुर धुन को सुनने में क्या आनंद आ रहा था। कोट्टवी राजा को चैन मिला। आहा परमानंद!

बीस मनिट बाद, वो बस सोने ही वाले थे कि- झंग! झणार! झप! वीणा वादक अपनी वीणा पर सो गया था।

दोबारा संगीत शुरू हुआ। मगर एक के बाद एक, सभी उनदिा कलाकार स्वर से हटते गए और गलत धुन बजाते रहे। बेसुरों की भरमार थी। नदि्रा देवी उन्हें सुनते ही वहाँ से भाग नकिलीं! और राजा फरि पूरी तरह जागे हुए, बहुत नाराज़ हुए।

उन्हें राज वदिूषक की बात याद आई और उसे बुला भेजा।

“हमें कोई कहानी सुनाई जाये!” आदेश दयिा राजा ने।

वदिूषक ने एक लम्बी, उब्काऊ सी कहानी शुरू की, इस उम्मीद से कि राजा उसे सुनते ही सो जायेंगे। आह, मगर हमारे राजा को चैन कहाँ था। बेचैन होकर पूछते रहे, “हाँ हाँ, वो तो ठीक है, मगर कहानी ख़तम कैसे होती है?”

नदि्रा देवी को यह बेचैनी पसंद नहीं आई। सो वो दूर ही रहीं। एक घंटे बाद, थकी हुई आवाज़ लेकर वदिूषक थका हारा सा अपने घर लौट गया। और राजा? वो तो अब भी जाग रहे थे।

उन्होंने रानी को जगाया और टहलने की ठान ली। रानीजी बहुत ही अनमने तरीके से तैयार हुईं।

“बस, मोगरे के बगीचे तक ही, ठीक है? उसके बाद हम लौटकर सो जायेंगे!”

वो चांदनी में चलते रहे, और पंछियों की धीमी चहक में राज महल के बड़े से बगीचे की परिक्रमा करते रहे। राजा को बड़ी शांति की अनुभूति हुई और उन्होंने सोचा, “आहा! यही समय है लौट कर सोने का।”

राजा लौट कर लेट गए, चारों और एक स्वप्नलि चुप्पी छाई हुई थी। अचानक उन्हें एक गड़गड़ाहट सी सुनाई दी। उनके पेट से।

संगीत, कहानी, मंद हवा और सैर-इन सबके चलते उन्हें भूख लग गई थी!

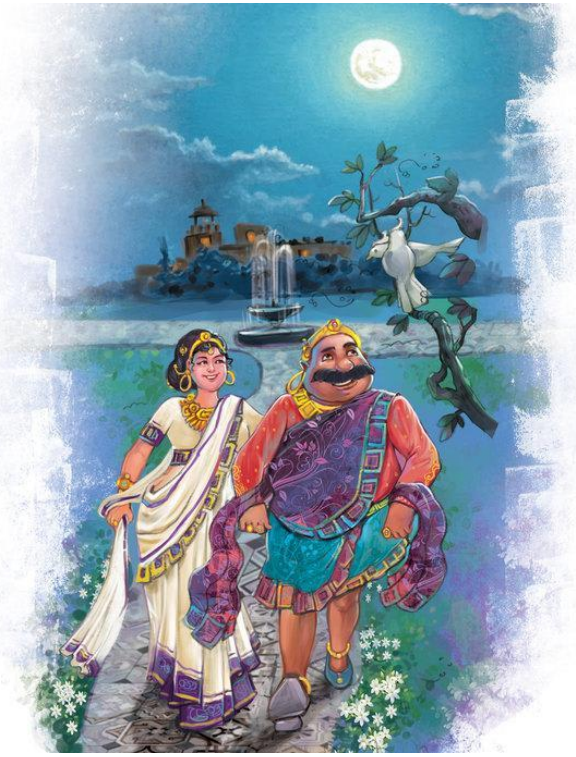

रानी ने मामले को अपने हाथों में लिया। उन्होंने दूध का एक छोटा गिलास मंगवाया, और मालिश वाले से राजा के पाँव भी दबवाए।

कुछ ही देर में निद्रा देवी ने आकर आशीर्वाद दिया। आख़िरकार राजमहल में उस

रात को शांति
छा गई।

हर दिन इसी तरह कार्यक्रम चलता रहा। वक़्त के साथ, कोट्टवी राजा थोड़ा और जल्दी सोने लगे। दो हफ्ते में, उन्होंने देखा कि दूसरे गिलास दूध के साथ ही उन्हें नींद
आ जाती थी। उसके कुछ हफ्ते बाद, सैर के तुरंत बाद सोने लगे वो। एक महीने बाद, विदूषक की कहानी ने सुला दिया राजा को।

और फिर, अंत में, वो रात के भोजन के बाद ही सो गए। प्रायः हर सुबह वो चुस्ती से जागते! उनकी चाल में उचक आ गई और वो सभी की ओर देखकर मुस्कुराने लगे
।

मगर इधर रसोईए, संगीतकार, विदूषक, मालिश वाले और रानी का क्या हाल हुआ? वो रात भर सेवा में तत्पर रहे,
उन्हें कभी यह नहीं पता होता था कि कब राजा जाग जाएँ और उन्हें बुला बैठें। और अब ये सब लोग दिन भर थके और चिड़चिड़े रहने लगे। वही हाल उनका भी था जो उनका इंतज़ार करते थे- रसोइए की बीवी, संगीतकार का बेटा, विदूषक का भाई, मालिश वाले के पिताजी, रानी की परिचारिका, परिचारिका का पति, पति का भाई, भाई का दोस्त, दोस्त के
माँ - बाप... सारा शहर।

राजा अपनी निद्राहीन प्रजा के लिए बहुत ही चिंतित हो उठे। अपने इस विस्तृत कार्यक्रम की सलाह तो हर किसी को वो दे नहीं सकते थे। उन्होंने अपने राजपुरोहित से सुझाव माँगा। उस बुद्दिमान इंसान को पता था कि यह एक जटिल समस्या है। “सभी से कहिए आज से पंद्रह दिन बाद नगर सभा में एकत्रित हों। सभी लोग गरम पानी से नहा कर, भोजन करके, सूर्यास्त पर हाज़िर हों। मैं सभी को आशीर्वाद देने के लिए निद्रा देवी को वहाँ बुलाऊँगा।”

सारा शहर एक जुट हुआ। सभी को बहुत ख़ुशी थी
कि अब उनके निद्राहीन दिनों का अंत होने को है।
राजपुरोहित देवी के नाम के मन्त्र जपने लगे।

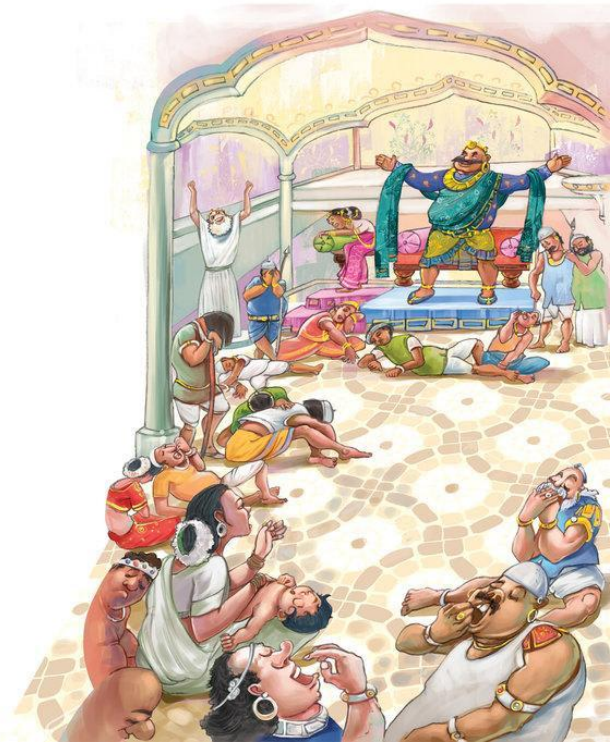

उनकी मनिमनिाहट के कुछ ही क्षण बाद, एक नई माँ ने, जिसे सबसे ज़्यादा नींद आई हुई थी, एक जम्हाई ली। उसे देखकर उसके बच्चे ने भी जम्हाई ली। बच्चे के पिता ने यह देखा और...

हाँ, जम्हाई ली।

एक संगीतकार ने धुन के बीच में ही जम्हाई ली और उसकी देखा देखी आस पास के बीस और जनों ने भी। फरि उनके पड़ोसयिों ने जम्हाई ली और पूरी सभा में जम्हाइयों की लहर सी दौड़ पड़ी।

नद्रि देवी इतनी सारी जम्हाइयों की पुकार को कैसे अनसुना कर देतीं? वो शहर में भागी भागी आईं, और सभी को नींद के एक ठंड़े झोंके से छू गईं।

और उस दनि के बाद से, वो हर रात कोट्टवी राजा के देश में हर एक को अपना आशीर्वाद देती रहीं। सभी लोग चैन से रात में सोते रहे।

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link .

Story Attribution:

This story: कोट्टवी राजा और उनींदा देश is translated by Swagata Sen Pillai . The © for this translation lies with Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Based on Original story: ' Kottavi Raja and his Sleepy Kingdom ' , by Yasaswini Sampathkumar . © Pratham Books , 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Other Credits:

'Kottavi Raja aur Uninda Desh' has been published on StoryWeaver by Pratham Books.The development of this book has been supported by Parag (Promoting Innovative Publishing in Education), an initiative of Tata Trusts. www. prathambooks.org

Illustration Attributions:

Cover page: King sleeping on the throne with courtiers watching , by Henu © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 2: King sleeping on the throne with courtiers around him , by Henu © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 3: A vague shape of doors , by Henu © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 5: A soldier standing with a spear , by Henu © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 6: A king on a throne looking at a fat man who is holding his stomach , by Henu © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 7: A huge pot of food , by Henu © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 8: A huge feast being cooked by three men , by Henu © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 9: A king on his bed and a man bringing something on a tray , by Henu © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 10: A curtain , by Henu © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 11: Musicians playing their instruments for a king , by Henu © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under

CC BY 4.0 license. Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

Some rights reserved. This book is CC--BY--4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

The development of this book has been supported by Parag (Promoting Innovative Publishing in Education), an initiative of Tata Trusts.

PRATHAM BOOKS
storyweaver

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link .

Illustration Attributions:

Page 12: A court jester , by Henu © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 13: A chandelier , by Henu © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 14: Moon , by Henu © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 15: A king and his queen taking a stroll in the moonlit park , by Henu © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 16: Two birds flying in opposite directions , by Henu © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 18: A man raising his arms in joy , by Henu © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0

license. Page 19: A king in the centre of a hall with everyone else sleeping around him , by Henu © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 20: Moonlit night seen through a castle balcony , by Henu © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

Some rights reserved. This book is CC--BY--4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

The development of this book has been supported by Parag (Promoting Innovative Publishing in Education), an initiative of Tata Trusts.

कोट्टवी राजा और उनींदा देश (Hindi)

कोट्टवी राजा को नींद नहीं आती थी, केवल रात के समय। दिन में, जब उनके मंत्री जटिल समस्याओं पर विचार करते थे, उन्हें नींद की झपकियाँ आती रहतीं। उन्होंने सभी से सुझाव मांगे, मगर किसी से भी कोई लाभ नहीं हुआ। और फिर एक दिन... आइये, इस कहानी के माध्यम से कोट्टवी राजा के देश चलें और देखें कि आगे क्या होता है।

यह पठन स्तर ३ की किताब है, उन बच्चों के लिए जो खुद पढ़ने को तैयार हैं।

PRATHAM BOOKS storyweaver

Pratham Books goes digital to weave a whole new chapter in the realm of multilingual children's stories. Knitting together children, authors, illustrators and publishers. Folding in teachers, and translators. To create a rich fabric of openly licensed multilingual stories for the children of India -- and the world. Our unique online platform, StoryWeaver, is a playground where children, parents, teachers and librarians can get creative. Come, start weaving today, and help us get a book in every child's hand!